डॉ·शिवाजी विष्णू निकम
एम·ए·,पीएच्·डी·
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक
हिन्दी विभाग,
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ·शिवाजी विष्णू निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि, प्रा·प्रशांत रामचंद्र नलवडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध "रघुवीर सहाय के काव्य का अनुशीलन" मेरे निर्देशन में बड़ी परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं प्रा·प्रशांत रामचंद्र नलवडे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा
दिनांक : 21/12/95

हस्ताक्षर
डॉ·शिवाजी विष्णू निकम
निर्देशक

(हिन्दी विभाग)

संस्तुति करता हूँ कि परीक्षा में उपस्थित किया जाए।

21/12/95
Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004

अ नु शं सा

हम अनुशंसा करते हैं कि, प्रा·प्रशांत रामचंद्र नलवडे का लिखा हुआ लघु-शोध-प्रबंध, एम्·फिल्·(हिन्दी) के परीक्षणार्थ सादर अग्रेषित।

19-12-1995

डॉ·गजानन सुर्वे
रीडर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा
(महाराष्ट्र)

L.B.S. College Satara

पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा
(महाराष्ट्र)

प्र ख्या प न

"रघुवीर सहाय के काव्य का अनुशीलन"

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक : 21/12/95

हस्ताक्षर

प्रा·प्रशांत रामचंद्र नलवडे

अनुसंधाता

भू मि का

सन 1943 ई·में अज्ञेय के संपादन में तारसप्तक का प्रकाशन हुआ और उन्होंने तारसप्तक के माध्यम से आधुनिक कविता के क्षेत्र में प्रयोगवादी विचारधारा को जन्म देकर एक नये युग का सूत्रपात किया, जो आगे चलकर "नयी कविता" के रूप में परिणत हो गया। नयी कविता का प्रारम्भ भी वैसे अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरे सप्तक तथा तीसरे सप्तक की कविताओं से विशेष रूप से माना जाता है, क्योंकि अज्ञेय ने ही सर्वप्रथम दूसरे सप्तक में नयी कविता के लिए "नयी कविता" शब्द का प्रयोग किया था।

नई कविता आज की समस्त विसंगतियों और विडम्बनाओं को युगानुरूप अभिव्यक्त करने में बेहत्तर साबित हुई है। उसने समकालीन जीवन-यथार्थ को बड़ी गम्भीरता और दायित्वपूर्ण तरीके से उकेरने की स्थिति बनाई। फलतः नये कवियों ने जिंदगी की असलियत से सीधा संवाद स्थापित किया।

नई कविता अपनी बदलती हुई मुद्रा की परख के लिए आलोचना के नये तेवर और प्रतिमानों की माँग करती है क्योंकि अभी भी कुछ आलोचकों का रूख नयी कविता के प्रति अवज्ञा और विरोध का है। उनकी मानसिकता रोटी, हड़ताल और राजनीति को कविता का विषय मानने से इन्कार करती रही। युग की नब्ज की पकड़ रचनाकार के लिए अनिवार्य है।

आ·नंददुलारे वाजपेयी को भी कहना पड़ा है कि नयी कविता में समरसता आ रही है, जो एक शुभ-लक्षण है। नयी कविता आज की जिंदगी की कड़वी, जटिल एवं भयावह सच्चाइयों को उकरने एवं समकालीन यथार्थ के उद्‌घाटन का प्रामाणिक दस्तावेज है। उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति में इतना गहरा तालमेल रहा है कि जीवन के कठिण्य एवं वैविध्य को सहज संप्रेष्य बना दिया है।

उस दिशा में नयी कविता के नये कवि रघुवीर सहायजी का प्रयोजन नयी कविता की संपूर्णता को पहचानने की ठोस एवं कारगर पहल है तथा उसके सही समीक्षात्मक विवेचना देने की शक्ल में गूँगे के मुँह में जुबान डालने की लगातार कोशिश है। यह मानने की इच्छा तो होती है कि नयी कविता के प्रवाह में कुछ ऐसी रंगत जरूर है जो अलग से पहचान में आ रही है, यह पहले भी थी, पर तब उसकी ओर ध्यान न था। आज की पीढ़ी उसे रेखांकित करके बार-बार दिखा रही है। यह दिखावा ही उसे पनपने नहीं दे रहा है। रही अलग से पहचानवाली रंगत की बात वह नयी कविता से ही फूटी है।

नयी कविता बहुआयामी है। उसके सभी आयाम खुल गये हैं। अभी ऐसा दावा करना थोडी जल्दबाजी लगती है क्योंकि हमने आजतक नयी कविता की बात तो की है लेकिन नयी कविता के एक-एक रचनाकार को लेकर बात करना शेष है। रघुवीर जैसे शक्तिवान कवि के सृजन का मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। उनका नयी कविता में मूल्यबोध कहाँ है ? इसका विस्तृत विश्लेषण भी नहीं हुआ है, अतः रघुवीर की कविताओं को मैंने अपने ढंग से सोचा है। आप इसे पसन्द करेंगे। प्रत्येक क्रान्तिदर्शी कवि अपने समय का संदेशवाहक होता है। कवि का काम समकालीनता को समर्थ आयाम देने के साथ भविष्य को भी एवं नये रूप में परिवर्तित करने का है। वर्तमान मूल्यों में परिवर्तित की नयी दिशा निर्मित करने वाले कवि भी सही अर्थों में आधुनिक साहित्य को गत्यात्मक बनाने के लिए प्रतिश्रुत होता है।

रघुवीर सहायजी ने आधुनिक हिन्दी कविता को एक नया संदर्भ सहजभाषा तथा रूढ़ियों से विद्रोह की चेतना प्रदान की है। रघुवीर की कविता ने हिन्दी काव्य को बौद्धिक और सामाजिक चेतना प्रदान की है और कविता को जनसमाज के निकट लाने का प्रयत्न किया है।

मैंने रघुवीर सहायजी की काव्य रचनाओं को तटस्थ दृष्टि में देखने की चेष्टा की है, परन्तु उनकी नवीन उद्भावनाओं और अभिनव भाव-दिशाओं का

निरूपण करने में सहानुभूति और प्रशंसा में कमी नहीं की है।

जब प्रयोगवाद और नयी कविता दोनों किसी-न-किसी बिंदु पर एक हो गये, युवा कवियों ने नये नामों का मेला ही लगा दिया। उसमें रघुवीर सहाय के साहित्यिक समग्र रूप से कोई समीक्षात्मक आकलन अभी तक नहीं हुआ है। इसीलिए प्रस्तुत विषय को मैंने अपने अध्ययन का क्षेत्र चुना है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध सात अध्यायों में विभाजित है, जिसमें रघुवीर सहायजी के समग्र साहित्य के साथ व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परामर्श है। प्रथम अध्याय में रघुवीर सहायजी के जीवनवृत्त के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। दूसरे अध्याय में कवि का मानवतावादी रूप निखर आया है। साथ ही रघुवीर सहायजी के मानवतावादी रूप का दर्शन मिलता है। उनकी कविताओं में मानवतावादी रूप का परामर्श किस प्रकार हुआ है, उसका समर्थन पाया जाता है। तीसरे अध्याय में कवि का संवेदनशील रूप दिखाई देता है। कवि संवेदनशील होने के कारण उनका भाव रेखांकन उभर आया है तथा विविध भावों के विविध रंग इसमें दिखायी देते हैं। चतुर्थ अध्याय में रघुवीरजी के आधुनिक राजनीतिक अवस्था का विस्तार से परिचय मिलता है। तथा उनकी कविताओं में राजनीति का किस प्रकार से समावेश हुआ है, इसका समर्थन पाया जाता है। पंचम अध्याय में रघुवीर सहाय का व्यंग्य कवि का अधिक सफलतम रूप निखर आया है। अनेक प्रकार के व्यंग्यों का परिचय उनके कविताओं की खास विशेषता है। षष्टम अध्याय में उनकी भाषाशैली एवं काव्य-शिल्प का रूप दिखाई देता है। लघु आकारवाले अंतिम अध्याय में नयी कविता में रघुवीरजी की संभावनाओं पर विचार किया गया है।

मेरे निर्देशक, छत्रपति शिवाजी कॉलेज के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के डॉ॰शिवाजीराव निकमजी की शोध-कार्य के समुचित एवं संतुलित संशोधन एवं निर्देशन में उनकी लगन ही उतनी महत्वपूर्ण रही है। पग-पग पर मुझे मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा है। उनके विद्वतापूर्ण निर्देशन में यह लघु-शोध-प्रबंध लिखा गया है। उन्हीं की प्रेरणा, शुभाशंसा का प्रतिफल यह शोध-कार्य है।

इस शोध-संकल्प की पूर्ति में जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना पूनित कर्तव्य मानता हूँ। लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ·जी·एस·सुर्वेजी तथा प्रा·जाधव के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे निर्देशन पुस्तकीय सहायता-सामग्री संवर्धन में सहयोग दिया है। उनकी ज्ञान-गरिमा ने मुझे यह शोध-कार्य संपन्न करने की प्रेरणा दी।

मेरे परमपूज्य पिता श्री·रामचंद्र पंढरीनाथ नलवडे उनका प्रोत्साहन मेरा प्रबंध पूरा करने के लिए प्रेरणादायी रहा है। उनकी अपार इच्छा के कारण मैं मेरा यह कार्य सफल कर सका हूँ।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे आदरणीय गुरूवर्य छत्रपति शिवाजी कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष एस·डी·आढावजी के सहयोग का मेरे लिए बहुत अधिक मूल्य है जिसे मैं शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकता, यह भी तय है कि इस सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था।

छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा के ग्रंथपाल तथा उनके सहयोगीयों का शुक्रिया अदा करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मेरे मित्रों ने इसमें सहयोग दिया है। पग-पग पर प्रोत्साहित किया - प्रेरणा प्रदान की , वह हैं प्रा·शिंदे पी·एम·, प्रा·जाधव एस·एस·, प्रा·तांबोळी एस·बी·, प्रा·मागाडे, प्रा·आगेडकर, धाईंजे एन·एस·, सावंत एस·एम· आदि। उनके आत्मीयता पूर्ण योगदान के प्रति हृदय के गहनतल से आभार प्रकट करना मात्र औपचारिकता होगी।

जिनके प्रति मेरी संपूर्ण श्रद्धा विनयागत है, उनके साथ ही उन सभी नये कवियों, लेखकों की पुस्तक रचनाओं का आभारी हूँ। जिनसे मैंने किसी-न-किसी रूप में सामग्री ग्रहण की है।

इस लघु-शोध-प्रबंध का अत्यन्त तत्परता से और सुरूचिपूर्ण टंकन-लेखन करनेवाले "रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग सातारा" के श्री·मुकुन्द ढवले, सुशीलकुमार कांबले और राजू कुलकर्णी धन्यवाद के पात्र हैं।

अ नु क्र म णि का

पृष्ठांक

अध्याय : 1 रघुवीर सहाय : जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व 001 - 030

1· उद्‌घोष

2· नयी कविता में रघुवीर का योगदान

3· दूसरा सप्तक के कवि

4· जीवनवृत्त

- जन्म तथा बचपन
- माता-पिता
- शिक्षा
- नौकरी
- विवाह
- ग्रार्हस्थ जीवन
- स्वभाव

5· व्यक्तित्व

- 1· नयी कविता में उनका व्यक्तित्व
- 2· रघुवीर की विचारधारा

6· कृतित्व

- 1· कविता
- 2· कहानी
- 3· निबंध
- 4· अनुवाद

पृष्ठांक

7· कविताओं का संक्षिप्त विवेचन एवं परिचय

1· सीढ़ियों पर धूप में

2· आत्महत्या के विरूद्ध

3· हँसो हँसो जल्दी हँसो

8· निष्कर्ष

अध्याय : 2 रघुवीर सहाय : मानवतावादी कवि 031 - 056

1· मानवता का परिचय

2· मानवता का सामाजिक पक्ष

3· मानवता में आधुनिकता

4· वर्तमान व्यवस्था की विसंगतियाँ

5· सामाजिक परिवर्तन

6· मानव मूल्य की समानता

7· मानवता चित्रण में व्यंग्य का सहारा

निष्कर्ष

अध्याय : 3 रघुवीर सहाय : संवेदनशील कवि 057 - 077

1· सामाजिक संवेदना

2· भ्रष्टाचार

3· राजनीतिक संवेदना

4· मध्यवर्गीयों की संवेदना

5· यथार्थ और आदर्श की संवेदना

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय : 4 — रघुवीर सहाय : राजनीतिक कवि — 078 - 108

1· राजनीति का साक्षात्कार
2· यथार्थ राजनीति
3· सामान्य व्यक्ति की पहचान
4· नारी का विडम्बन
5· मानवीय बोध

निष्कर्ष

अध्याय : 5 — रघुवीर सहाय : व्यंग्य कवि — 109 - 131

1· रघुवीर सहाय के व्यंग्य-काव्य की सीमाएँ
2· नई कविता में लोकतन्त्र का आधार व्यंग्य
3· राजनीतिक व्यंग्य
4· सामाजिक व्यंग्य
5· आधुनिक सभ्यता पर व्यंग्य
6· भ्रष्टाचारपरव्यंग्य

निष्कर्ष

अध्याय : 6 — रघुवीर सहाय के काव्य में - काव्य शिल्प — 132 - 160

1· काव्य-शिल्प का परिचय
2· वस्तु-चेतना और काव्य-शिल्प
3· कविता का शिल्प-विधान
4· प्रतीक विधान
5· बिम्ब विधान
6· जनभाषा का प्रयोग
7· मुहावरें और लोकोक्ति का प्रयोग

निष्कर्ष

अध्याय : 7 — समापन — 161 - 167

संदर्भ-ग्रंथ-सूची — 168 - 171